शोध प्रस्ताव

खोरठा साहित्यकार मनपूरन गोस्वामी का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष – 2025

शोध निर्देशक

डॉ० अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची, विश्वविद्यालय, राँची।

शोधकर्त्ता

सरोज कुमारी
यू. जी. सी.–नेट/जे. आर. एफ.
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

खोरठा साहित्यकार मनपूरन गोस्वामी का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

भूमिका

खोरठा भाषा साहित्य को विस्मृत होने से बचाने के लिए जिन साहित्यकारों ने भरसक प्रयास किया है उनमें से भूवनेश्वर दत्त शर्मा व्याकुल, श्रीनिवास पानुरी, ए. के. झा, नरेश नीलकमल, विश्वनाथ दसौंधी राज, विश्वनाथ प्रसाद नागर, महेन्द्र प्रबुद्ध, बी. एन. ओहदार, बिनोद कुमार, शिवनाथ प्रमाणिक, श्यामसुदर महतो श्याम, गजाधर महतो प्रभाकर, महेन्द्र गोस्वामी, आदि का योगदान महत्वपूर्ण है। लोकसाहित्य के परिवृत से खोरठा भाषा साहित्य को खींच लाना और शिष्ट साहित्य की क्षीण रेखा को उभारकर नये कलेवर का बीजारोपण करना, इन सभी साहित्यकारों का मुख्य रूप से योगदान रहा है।

झारखण्ड में अनेक जातियाँ और उनकी संस्कृति एवं भाषाएँ हैं। इनमें खोरठा भाषा का अपना एक विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण स्थान है। खोरठा भाषा झारखण्ड की एक स्वतंत्र और समृद्ध भाषा है। साहित्य की विविध विधाओं में यथा गद्य, पद्य विधाओं के अंतर्गत गीत कविता, निबंध, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, शब्द चित्र, लघु कथा आदि खोरठा भाषा में लिखे गए हैं। इसका लोकसाहित्य ने सिर्फ खोरठा क्षेत्र अपितु समस्त झारखण्ड क्षेत्र का अक्षय भंडार है। झारखण्ड में मुख्यतः दो तरह की भाषाएँ बोली जाती है— जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा।

खोरठा भाषा—साहित्य में प्राचीन काल से ही एक से बढ़कर एक कवि, साहित्यकार होते रहे हैं। जिन्होंने अपनी रचना एवं लेखनी से अन्य भाषा—भाषियों को भी आकर्षित किया है। वर्तमान में क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व आधुनिक परिवेश में बहुत अधिक बढ़ गया है। आज खोरठा साहित्य में शिष्ट साहित्य की धारा प्रवाहित हो रही है, जिसमें अनेकों साहित्यकरों का योगदान प्राप्त होता जा रहा है। झारखण्ड आन्दोलन में इस भाषा ने झारखंडियों का संगठित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नये—नये कवि, लेखक अपने साहित्य रचनाओं से सम्पूर्ण झारखंड आन्दोलन की क्रांति से ओत—प्रोत किया। आधुनिक साहित्यकारों में श्रीनिवास पानुरी, विश्वनाथ दसौंधी राज, नरेश नीलकमल, ए. के. झा, विश्वनाथ नागर, श्यामसुंदर महतो श्याम, बी. एन. ओहदार, महेन्द्र नाथ गोस्वामी, सुकुमार, महेन्द्र प्रबुद्ध, बिनोद कुमार, कुमारी शशि, गिरिधारी गोस्वामी, पंचम महतो, वंशीलाल वंशी, संतोष कुमार महतो, गजाधर महतो प्रभाकर, प्रह्लादचंद्र दास, शांति भारत, परितोष कुमार प्रजापति, धनंजय प्रसाद श्यामसुंदर केवट, प्यारे हुसैन प्यारे, दिनेश कुमार

आदि साहित्यकारों ने अपनी मूल्यवान रचनाओं से खोरठा भाषा–साहित्य को समृद्ध किया हैं। इन खोरठा कवियों लेखकों व रचनाकारों के अतिरिक्त आधुनिककालीन खोरठा साहित्य में मनपूरन गोस्वामी का स्थान भी महत्वपूर्ण है। मनपूरन गोस्वामी ने खोरठा भाषा–साहित्य के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दिये हैं। गोस्वामी जी गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में साहित्य रचना किये है।

मनपूरन गोस्वामी का जन्म बोकारो जिला के पूंडरू गाँव के एक साधारण परिवार में 12 सितम्बर 1944 को हुआ था। इनकी माता का नाम मुक्तेश्वरी देवी और पिता का नाम भूषण चन्द्र गोस्वामी है। छात्र जीवन से ही इनकी रूची साहित्य लेखन की ओर थी। आगे चलकर इन्होंने साहित्य एवं समाजसेवा के क्षेत्र में कई उपलब्धियाँ हासिल किये। इनकी कृतियाँ इस भाषा के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। खोरठा को विकास की गति तथा दिशा देने वालों में इनका भी योगदान है। इनकी कृतियाँ इस भाषा के उत्थान में सहभागी है। मनपूरन गोस्वामी जैसे खोरठा साहित्यकार का मूल्यांकन करते समय भी हमें उनके जीवन और साहित्य को सामने रखकर देखना पड़ेगा। वास्तव में साहित्यकार के जीवन को जाने बिना हम उसकी रचनाओं को ठीक से नहीं जान सकते है। उनके जीवन को जाने बगैर उनकी रचनाओं का मूल्यांकन भी ठीक ढंग से नहीं कर सकते हैं।

मनपूरन गोस्वामी द्वारा रचित एवं प्रकाशित गीत, कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि की सूची :–

- महुआ– खोरठा गीत
- भगत और भजन–गिति नाट्य
- खोरठा देसभगती – खोरठा गीत
- मारूती– मनोरंजक खोरठा नाटक
- परासचित– खोरठा नाटक
- बड़की माय– खोरठा नाटक
- रिकसावाला– खोरठा उपन्यास
- काहे छोड़ल गाँव – खोरठा कहानी गोछ

अप्रकाशित सूची :–

- साफ रहा
- मनुबाबा
- बुरी आदत
- जितिया व्रत कथा
- सती अनुसूईयाँ

शोध की परिकल्पना :–

परिकल्पना शब्द परि+कल्पना दो शब्दों के मेल से बना है। परि का अर्थ है– चारों ओर तथा कल्पना का अर्थ है चिंतन। इस प्रकार परिकल्पना से तात्पर्य किसी समस्या से संबंधित समस्त संभावित समाधान पर विचार करना है।

खोरठा भाषा–साहित्य में प्राचीन काल से ही एक से बढ़कर एक कवि गायक, लेखक, रचनाकार होते रहे हैं और इनमें से कई साहित्यकारों पर शोध कार्य हुए है। जिनमें श्रीनिवास पानुरी, ए. के. झा, विश्वनाथ दसौंधी राज, चितरंजन महतो चित्रा आदि जैसे साहित्यकरों पर शोध कार्य हो चुके है और जनार्दन गोस्वामी व्यक्ति, सुकुमार, शिवनाथ प्रमाणिक, आदि जैसे साहित्यकारों पर शोध जारी है। इसी क्रम में प्रस्तावित शोध कार्य साहित्यकार मनपूरन गोस्वामी जी पर शोध कार्य की योजना मेरे मन में एम. ए. करने के दौरान से चली आ रही थी। चूँकि इनकी रचनाओं से मैं काफी प्रभावित थी। उनकी रचनाओं से प्रभावित होकर ही मैंने इस महान साहित्यकार के ऊपर शोध कार्य प्रारंभ करना चाहती हूँ। जिससे खोरठा भाषा–साहित्य मे अभिरूचि के साथ–साथ भाषा ज्ञान की क्षमता एवं योग्यता का विकास होगा।

शोध की प्रेरणा

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा मुझे एम. ए. अध्ययन के दौरान अपने शिक्षकों से मिला। मेरी मातृभाषा खोरठा है, मेरी प्रारंभिक शैक्षणिक पृष्टभूमि खोरठा क्षेत्र में होने के कारण इस भाषा की ओर मेरा झुकाव शुरू से ही रहा है। आज समाज में समुचित विकास के लिए साहित्य के बारे में जानना अति आवश्यक है। साहित्य समाज का दर्पण है, साहित्य के बिना विकसित समाज और संस्कृति की परिकल्पना नहीं की जा सकती है।

किसी भी भाषा–साहित्य को बचाये रखने के लिए साहित्य की भूमिका अहम रही है। जहाँ तक विषय चुनाव की बात है तो मैंने मनपूरन गोस्वामी जी की रचनाओं को पढ़ा, इनकी रचनाओं ने मुझे काफी प्रभावित किया। फलतः इनकी रचनाओं को समाज के सामने प्रस्तुत करना ही मेरे लिए सबसे बड़ी बात है। मेरे गुरूवरों ने भी इस कार्य को करने के लिए प्रेरित किया।

शोध का उद्देश्य :–

- खोरठा भाषा एवं साहित्य का गहन अध्ययन करना।
- खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति, इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर, जनजीवन का परिज्ञान होगा तथा साथ ही आम लोगों में जन चेतना का संचार होगा।
- खोरठा भाषा का उद्भव एवं विकास का अध्ययन करना।
- आधुनिक खोरठा साहित्यकार मनपूरन गोस्वामी के जीवन और साहित्य पर प्रकाश पड़ेगा।
- झारखण्ड में रहने वाले लोगों के जीवन–दर्शन एवं मनोवृति का पता चलेगा, साथ ही इस क्षेत्र मे रहने वाले सदान एवं आदिवासियों के परस्पर भाईचारा का भी ज्ञान होगा।

शोध का महत्व

- इस शोध–प्रबंध के माध्यम से समस्त खोरठा भाषा–भाषियों, समाज के कवियों और साहित्यकारों का सम्मान बढ़ेगा।
- मातृभाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा तथा नई जागृति उत्पन्न होगी।
- मेरे इस शोध प्रबंध के प्रकाशित होने से आधुनिक खोरठा साहित्यकार मनपूरन गोस्वामी जी का सम्मान बढ़ेगा।

शोध का समाज में प्रभाव :–

प्रस्तुत शोध को पूरा करने पर प्रकाशित होने से समाज पर इसका साकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

- मनपूरन गोस्वामी के जीवन और साहित्य के प्रकाश में आने पर समस्त खोरठा भाषा–भाषियों के समाज में साहित्य के प्रति सम्मान और जागृति की लहर आयेगी।
- व्यक्तिगत कार्यों के गुण गरिमा के कारण सामाजिक कार्यों की गुण गरिमा बढ़ेगी।
- खोरठा समाज के साथ सभी भाषा समाज के दिग्गज साहित्यकरों के जीवन और साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए भावी पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।
- शोध के प्रकाश में आने पर झारखंड ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के क्षेत्रीय भाषाओं के यशस्वी रचनाकारों के योगदानों को प्रकाश में लाने की प्रेरणा मिलेगी।

शोध विधि

- विवरणात्मक विधि
- साक्षात्कार विधि
- वर्णनात्मक विधि
- अवलोकन विधि
- तुलनात्मक विधि

उपकरण

- मोबाईल
- कैमरा
- कम्प्यूटर
- इंटरनेट
- टेप रिकार्डर
- टंकण मशीन
- पेन ड्राइव
- किताबें आदि

शोध प्रारूप

खोरठा साहित्यकार मनपूरन गोस्वामी का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

प्रथम अध्याय

खोरठा भाषा एवं साहित्य

क) खोरठा भाषा एवं साहित्य का सामान्य परिचय

ख) खोरठा भाषा एवं अन्य झारखंडी आर्य भाषाएँ

ग) खोरठा भाषा साहित्य की प्राचीन परम्परा

घ) खोरठा भाषा साहित्य में स्वतंत्रता का प्रभाव

दूसरा अध्याय

मनपूरन गोस्वामी का जीवनवृत

क) पारिवारिक पृष्ठभूमि

ख) जन्म

ग) बाल्यवस्था

घ) किशोरावस्था

ङ) युवावस्था

च) शिक्षा

छ) विवाह

ज) नौकरी (बोकारो स्टील प्लांट) सेवानिवृत

झ) विविध कार्य

तृतीय अध्याय

मनपूरन गोस्वामी जी की वैयक्तिक विशेषताएँ और सामाजिक जीवन

क) बाह्य व्यक्तित्व

ख) आन्तरिक व्यक्तित्व

ग) सामाजिक जीवन के विविध आयाम

चतुर्थ अध्याय

मनपूरन गोस्वामी जी की समकालीन और स्थानीय परिस्थितियाँ

क) सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

ख) साहित्यिक परिस्थितियाँ

ग) आर्थिक परिस्थितियाँ

घ) राजनीतिक परिस्थितियाँ

पंचम अध्याय

मनपूरन गोस्वामी जी की पद्य कृतियाँ एवं उनकी विशेषताएँ

क) महुआ गीत संग्रह

ख) भगत आर भजन

ग) खोरठा देसभगती गीत

षष्ठ अध्याय

मनपूरन गोस्वामी जी की गद्य कृतियाँ एवं उनकी विशेषताएँ

क) कहानी – काहे छोड़ल गाँव

ख) उपन्यास– रिक्सावाला

ग) नाटक – (i)परासचित

(ii) मारूति

(iii) बड़की माय

सप्तम अध्याय

मनपुरन गोस्वामी जी की अन्य भाषाओं की कृतियाँ एवं उनकी विशेषताएँ

1. हिन्दी
   क) रूद्राक्ष ज्योति
   ख) अमृत वाणी
2. बांगला
   क) साधना

उपसंहार

परिशिष्ट

1. आधार ग्रंथों की सूची
2. सहायक ग्रंथों की सूची
3. पत्र–पत्रिकाओं की सूची
4. साक्षात्कार
5. चित्रावली

नोट :– शोध प्रबंध में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक	**शोधकर्त्ता**
डॉ० अर्चना कुमारी	**सरोज कुमारी**
सहायक प्राध्यापक	यू. जी. सी. –नेट / जे. आर. एफ.
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग	स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
राँची, विश्वविद्यालय, राँची।	राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची :–

1. कुमारी डॉ. समरिता, कविरत्न शारदा प्रसाद शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व, के. के. पब्लिकेशन, 2013
2. केशरी, डॉ. सबिता, नागपुरी कवि कंचन जीवन और साहित्य, नागपुरी संस्थान पिठौरिया, राँची, 2015
3. गिरिराज, डॉ. गिरिधारी राम गौंझू, पीटर शांति नवरंगी व्यक्तित्व एवं कृतित्व, झारखंड झरोखा, रातू रोड राँची, 2014
4. गोस्वामी, मनपूरन, महुआ, इन्दु प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिसर्स,बोकारो, 2000
5. गोस्वामी, मनपूरन, भगत आर भजन, इन्दु प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिसर्स,बोकारो, 2000
6. गोस्वामी, मनपूरन, खोरठा देसभगती गीत, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, 2004
7. गोस्वामी, मनपूरन, बड़की माय, डीएमटी पब्लिकेशन बोकारो, 2007
8. गोस्वामी, मनपूरन, मारूती, श्री सुन्दर लाल गोस्वामी, खोरठा विकास मोर्चा, 2008
9. गोस्वामी, मनपूरन, काहे छोड़ल गाँव, बालीडीह खोरठा कमिटी, बोकारा, 2013
10. गोस्वामी, मनपूरन, रिकसावाला, नयन गोस्वामी स्टार एनजी प्रोडक्शंस फाउंडर, मुंबई, 2022

संदर्भ/सहायक ग्रंथों की सूची

1. ओहदार, डॉ. बी.एन.,खोरठा भाषा साहित्य (उद्भव एवं विकास), मार्ग दर्शन पब्लिकेशन, 2007
2. कुमार, डॉ. बिनोद, सोंध माटी, जनजातीय भाषा अकादमी, राँची, 1990
3. कुमार, डॉ. निरंजन, ए. के. झा व्यक्तित्व एवं कृतित्व, झारखंड झरोखा, राँची, 2020
4. कुमारी, डॉ. अर्चना, खोरठा शिष्ट साहित्य : एक अध्ययन, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, 2005
5. गौंझू, डॉ. गिरिधारी, झारखंड का लोक संगीत, झारखण्ड झरोखा, 2015
6. झा, डॉ. ए. के., रस छंद अलंका, बोकारो, 2011
7. झा, डॉ. ए. के.,खोरठा काठे गइदेक खंडी, राँची, 1983
8. तिवारी, पं. योगेन्द्र नाथ, नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय, झारखंड झरोखा, राँची, 1970
9. प्रमाणिक शिवनाथ, खोरठा लोक साहित्य, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद, बोकारो, 2004
10. सिंह, डॉ. जितेन्द्र कुमार, हिन्दी साहित्य एवं भाषा के विविध आयाम, कल्पना प्रकाशन दिल्ली, 2016

खोरठा पत्र–पत्रिकाएँ

1. मातृभाषा, श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद, 1957
2. खोरठा, श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद,1970
3. तितकी, विश्वनाथ दसौंधी 'राज', कतरासगढ़, धनबाद, 1977
4. करील, डॉ० बी०एन० ओहदार, कतरासगढ़ धनबाद, 1977
5. इंजोर, धनजंय प्रसाद, मधुपूर दवेघर, 1997
6. लुआठी, आकाशखूंटी, गिरिधारी गोस्वामी, बालीडीह, बोकारो, 1999
7. सहिया, अनिल कुमार 'विस्थापित', बोकारो, 2002
8. सहिदान, कुशवाह, मरीक फाल्गुनी, गिरीडीह, 2002
9. तितकी, झा, डॉ० ए० के०, ढांकी क्षेत्र खोरठा कमिटी, रामगढ़
10. परास फुल, प्रबुद्ध, महेन्द्र, धनबाद, 2009